Toppersnotes®
Unleash the topper in you

हिमाचल प्रदेश

पटवारी

Revenue Department of Himachal Pradesh

भाग - 2

हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	हिंदी भाषा का परिचय	1
2	वर्ण विचार	5
3	संज्ञा	9
4	सर्वनाम	11
5	विशेषण	12
6	क्रिया	13
7	कारक	20
8	उपसर्ग	23
9	प्रत्यय	32
10	संधि	40
11	समास	56
12	रस	62
13	छंद	64
14	तत्सम – तद्भव शब्द	72
15	वाक्य विचार	74
16	पर्यायवाची	81
17	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द	83
18	विलोम शब्द	86
19	वाक्य के लिए एक शब्द	92
20	मुहावरे	98
21	लोकोक्तियाँ	104
22	Noun (संज्ञा)	107
23	Pronoun (सर्वनाम)	113

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	Article (लेख)	116
25	Adjective (विशेषण)	120
26	Adverb (क्रिया विशेषण)	126
27	Verb (क्रिया)	133
28	Modal	140
29	Conjunction (संयोजक)	144
30	Preposition (उपसर्ग)	150
31	Time and Tense (समय और काल)	167
32	Subject–Verb Agreement (कर्ता क्रिया अनुबंध)	171
33	Conditional Sentences (सशर्त वाक्य)	175
34	One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन)	178
35	Antonyms & Synonyms (विलोम और पर्यायवाची शब्द)	201
36	Idioms & Phrases (मुहावरे और वाक्यांश)	213
37	Spelling Correction (वर्तनी सुधार)	226
38	Voice (वाच्य)	230
39	Narration (कथन)	234

1 CHAPTER भाषा

"भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत पर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है।

बोली

"बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते है जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है; किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलनेवाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती।"

भाषा का क्षेत्र व्यापक हुआ करता है। इसे सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व्यापारिक आदि मान्यताएँ प्राप्त होती है; जबकि बोली को मात्र सामाजिक मान्यता ही मिल पाती है। भाषा का अपना गठित व्याकरण हुआ करता है; परन्तु बोली का कोई व्याकरण नहीं होता। हाँ, बोली ही भाषा को नये-नये बिम्ब, प्रतीकात्मक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि समर्पित करती है। जब कोई बोली विकास करते-करते उक्त सभी मान्यताएँ प्राप्त कर लेती है, तब वह वोली न रहकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे- खडी बोली हिन्दी जो पहले (द्विवेदी - युग से पूर्व) मात्र प्रांतीय भाषा या बोली मात्र थी वह आज भाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है।

एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आस-पास की बोलियों पर उसका भारी प्रभाव पड़ता है। आज की खडी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि सभी को प्रभावित किया हैं। हाँ, यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी मानक भाषा कुछ बोलियों को बिल्कुल समाप्त भी कर देती है। एक बात और है, मानक भाषा पर स्थानीय बोलियों का प्रभाव ही देखा जाता है।

एक उदाहरण द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है- बिहार राज्य के बेगूसराय खगडिया, समस्तीपुर आदि जिलों में प्रायः ऐसा बोला जाता है-
हम कह देंगे। हम नै करेंगे आदि।
भोजपुर क्षेत्र में : हमें लौक रहा है (दिखाई पड़ रहा है। हम काम किये (हमने काम किया)
पंजाब प्रान्त का असर: हमने जाना है (हमको जाना हैं)
दिल्ली - आगरा क्षेत्र मे : वह कहवे था / मैं जाऊँ। मेरे को जाना है।
कानपुर आदि क्षेत्रों में : वह गया हैगा।
एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं, जबकि एक बोली में कई भाषाएँ नहीं होतीं।

बोली बोलनेवाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली में बातें करते हैं; किन्तु बाहरी लोगों से भाषा का ही प्रयोग करते है।
ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियों है-

- (क) **भारोपीय परिवार :** उत्तरी भारत में बोली जानेवाली भाषाएँ।
- (ख) **द्रविड परिवार :** तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम।
- (ग) **आस्ट्रिक परिवार :** संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खडिया, कोर्क, भूमिज, गढ़वा, पलक, वा, खासी, मोनख्मे, निकोबारी।
- (घ) **तिव्वती चीनी :** लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर - मिरी, अक।
- (ङ) **अवर्गीकृत :** बुरूशास्की, अंडमानी भर
- (च) **करेन तथा मन :** बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र हैं)

हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है। हिन्दी की उत्पत्ति प्राकृत से। प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है। स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यों की भाषा पुरानी संस्कृत थी। उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते है। उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुई। हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई। प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं की। हमारी वर्तमान हिन्दी, अर्द्धगामी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं हैं; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते है। एक बहुत बड़े क्षेत्र - जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है-की अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी; किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बड़ा ही व्यापक हो चला है। इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है-

- (क) **बिहारी भाषा :** बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है। यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उडिया और आसामी की बहन लगती है। इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं- मैथिली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि। मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बड़े प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए।

(ख) पूर्वी हिन्दी : अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली निकली है गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस - जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की। दूसरी तीन बोलियाँ है- अवधी, बोली और छत्तीसगढी। मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी है।

(ग) पश्चिमी हिन्दी : पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी है; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है।

यह राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी से संबंध रखती है। इस भाषा के कई भेद है- हिन्दुस्तानी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली, बाँगरू और दक्षिणी।

गंगा-यमुना के बीच मध्यवर्ती प्रान्त में और उसके दक्षिण दिल्ली से इटावे तक ब्रजभाषा बोली जाती है। गुडगाँव और भरतपुर, करोली और ग्वालियर तक ब्रजभाषी है। इस भाषा के कवियों में सूरदास और बिहारीलाल ज्यादा चर्चित हुए।

कन्नौजी, ब्रजभाषा से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इटावा से इलाहाबाद तक इसके बोलनेवाले है। अवध के हरदोई और उन्नाव में यही भाषा बोली जाती हैं।

बुंदेली बुंदेलखंड की बोली है। झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर के पूर्वी प्रान्त, मध्यप्रदेश के दमोह छत्तीसगढ़ के रायपुर, सिउनी, नरसिंहपुर आदि स्थानों की बोली बुँदेली है। छिंदवाडा और हुशंगाबाद के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रचार है।

हिसार, झींद, रोहतक, करनाल आदि जिलों में बाँगरू भाषा बोली जाती है। दिल्ली के आसपास की भी यही भाषा है।

दक्षिणी हिन्दी बोलनेवाले मुंबई, बरोदा, बरार, मध्य प्रदेश, कोचीन, कुग, हैदराबाद, चेन्नई, माइसोर और ट्रावनकोर तक फैले हैं। इन क्षेत्रों के लोग मुझे या मुझको की जगह 'मेरे को' बोलते हैं।

भारत की भाषाओं की सूची

क्र.सं.	भाषाएँ	बोलनेवालों का अनुपात % में
1	संस्कृत	0.01
2	मैथिली	09
3	मराठी	7.5
4	नेपाली	0.3
5	पंजाबी	2.8
6	संथाली	0.6
7	मलयालम	3.6
8	मणिपुरी	0.2
9	असमिया	1.6
10	ओडिया	3.4
11	गुजराती	4.9
12	कश्मीरी	0.5
13	कन्नड	3.9
14	डोगरी	0.2
15	कोंकणी	0.2
16	बांग्ला	8.3
17	तमिल	6.3
18	सिंधी	0.3
19	उर्दू	5.2
20	बोडो	0.1
21	तेलुगू	7.9
22	हिन्दी	40.2

देवनागरी लिपि

'हिन्दी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी लिपी का विकास 'ब्राह्मी लिपी' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है। 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों बडौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था। महाराष्ट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया।

देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

(i) फारसी प्रभाव : पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिह्न नहीं थे, जो बाद में फारसी से प्रभावित होकर विकसित हुए- क, ख, ग, ज, फ

(ii) बांग्ला - प्रभाव : गोल-गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई।

(iii) रोमन-प्रभाव विराम - चिह्नों, जैसे - अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नसूचक चिह्न, विस्मयसूचक चिह्न, उद्धरण चिह्न एवं पूर्ण विराम में 'खड़ी पाई' की जगह 'बिन्दु' (Point) का प्रयोग होने इससे प्रभावित हो विभिन्न लगा।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ :

- इसके ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक हैं।
- प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण है।
- वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य है।
- छपाई एवं लिखाई दोनों समान है।
- हस्व एवं दीर्घ में स्वर बँटे है।
- निश्चित मात्राएँ है।
- उच्चारण एवं प्रयोग में समानता है।
- प्रत्येक के दिए अलग लिपि चिह्न है।

ध्वनि

'ध्वानि' का अर्थ है-वर्ण या भाषा की लघुतम इकाई। इसका खंड या टुकड़ा नहीं हो सकता।
अर्थात 'वर्ण वह मूल ध्वनि है, जिसका खंड नहीं होता। "
वर्णों या ध्वनियों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 46 वर्ण है-

1. स्वर वर्ण (11)

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ और औ।

स्वर वर्णों का उच्चरण बिना रुके लगातार होता है। ऊपर के किसी वर्ण का उच्चारण लगातार किया जा सकता है सिर्फ 'ऋ' वर्ण को छोड़कर; क्योंकि ऋ का लगातार उच्चारण करने पर 'इ' स्वर आ जाता है।

उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर स्वर वर्णों को दो भागों में बाँटा गया है-

(a) **मूल या ह्रस्व स्वर -** अ, इ, उ और ऋ
(b) **दीर्घ स्वर -** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, और औ
ए: आ /आ + इ/ई (गुण होने के कारण)
ओ : आ / आ + उ/ऊ (गुण होने के कारण)
ऐ : अ / आ + ए (वृद्धि होने के कारण)
औ : अ/आ + ओ (वृद्धि होने के कारण)

जाति के अनुसार स्वर वर्णों को दो भागों में रखा गया है-

(a) **सजातीय/ सवर्ण स्वर :** इसमें सिर्फ मात्रा का अंतर होता है। ये ह्रस्व और दीर्घ के जोडेवाले होते है। जैसे- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ
(b) **विजातीय/असवर्ण स्वर :** ये दो भिन्न उच्चारण स्थानवाले होते है। जैसे-
अ- इ, उ - ओ आदि।
स्वरों के प्रतिनिधि रूप, जिनसे व्यंजन वर्णों का उच्चारण हो पाता है 'मात्रा' कहते हैं।

2. **व्यंजन वर्ण (33)**
व्यंजन वर्णो का उच्चारण रुक-रुक कर होता है। ये वर्ण आधी मात्रावाले होते हैं, इसलिए बिना स्वर के इनका उच्चारण असंभव है।

व्यंजन वर्णों को तीन भागों में बाँटा गया है-

(a) **स्पर्श व्यंजन :** ये वर्ण विभिन्न वागिन्द्रियों (कंठ, तालु, मूदर्धा, दन्त, ओष्ठ आदि) से स्पर्श क कारण उच्चरित होते हैं। इसके अंतर्गत निम्नलिखित वर्ण आते है-
कवर्ग : क् ख् ग् घ् ड्
चवर्ग : च् छ् ज् झ् ञ
टवर्ग : ट् ठ् ड् द् ण् (ड, ढ)
तवर्ग: त् थ् द् ध् न्
पवर्ग : प् फ् ब् भ् म्
(b) **अन्तःस्थ व्यंजन :** ये वर्ण स्पर्श एवं ऊष्म के बीच आते है। इसके अंतर्गत य्, र्, ल् और व्- ये चार ध्वनियाँ आती है।
(c) **ऊष्म व्यंजन :** ये ऐसे वर्ण है, जिनके उच्चारण में विशेष घर्षण के कारण मुख से गर्म हवा निकलती हैं। इसके अंतर्गत श्, ष्, स् और ह् आते हैं।

3. **अयोगवाह वर्ण:** 'अनुस्वार' और 'विसर्ग' अयोगवाह वर्ण है। ये स्वर एवं व्यंजन दोनों द्वारा ढोए जाते हैं।
जैसे-
अं-अः (स्वर द्वारा) कं- कः (व्यंजन द्वारा)
उच्चारण में वायु - प्रक्षेप की दृष्टि से या काकल के आधार पर वर्णों के दो प्रकार है-

(a) **अल्पप्राण :** ऐसे वर्ण, जिनके उच्चारण में वायु की सामान्य मात्रा रहती है और हकार-जैसी ध्वनि बहुत ही कम होती है। इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्ण, वर्गों के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण, अनुस्वार और अन्तःस्थ व्यंजन आते हैं। इसकी कुल संख्या 11 + 15 + 1 + 4 =31 है।
(b) **महाप्राण :** महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण में वायु की पर्याप्त मात्रा होती हैं, जिसके कारण हकार-जैसी ध्वनि स्पष्ट दिखती है। इसके अंतर्गत सभी वर्गों के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन, विसर्ग और ऊष्म व्यंजन आते हैं। इसकी कुल संख्या 10 + 1 + 4 = 15 है।

स्वर - तंत्री के आधार पर वर्णों को दो अन्य भागों में भी बाँटा गया है–

(a) **घोष या सघोष वर्ण :** घोष ध्वनियों के उच्चारण में स्वर - तंत्रियों आपस में मिल जाती है और वायु धक्का देते बाहर निकलती है। फलतः झंकृति पैदा होती है। इसके अंतर्गत सभी स्वर वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण, अन्तःस्थ और ह आते है।
(b) **अधोष वर्णों के उच्चारण में स्वर -** तंत्रियाँ परस्पर नहीं मिलती। फलतः वायु, आसानी से निकल जाती हे। इस वर्ग में वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण और तीनों स (श, ष, स) आते है।

आभ्यन्तर प्रयत्न के आधार पर स्वरों को चार और व्यजनों को आठ वर्गों में रखा गया है-

	प्रकार	**वर्ण**
स्वर	संव्रत स्वर	इ, ई, उ और ऊ
	अर्द्धसंवृत स्वर	ए, ऐ, ओ और औ
	अर्द्धविवृत स्वर	अ
	विवृतस्वर	आ

	प्रकार	**वर्ण**
व्यंजन	स्पर्श व्यंजन	क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प. फ, व, भ
	स्पर्श संघर्षी व्यंजन	न, छ, ज और झ
	संघर्षी व्यंजन	म, श, ह, ख, ग, ज, फ और व
	अनुनासिक	छ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार
	पार्श्विक	ल
	लुंठित / प्रकंपी	र
	उत्क्षिप्त	ड, ढ
	अर्द्ध स्वर	य और व

उच्चारण-स्थान की दृष्टि से वर्णों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है-

प्रकार	**वर्ण**
1. कंठ्य वर्ण	- अ, आ, कवर्ग, विसर्ग और ह
2. तालव्य वर्ण	- इ, ई, चवर्ग, य और श
3. मूर्द्धन्य वर्ण	- ऋ, टवर्ग, र और ष
4. दंत्य वर्ण	- तवर्ग और स
5. वर्त्स्य वर्ण	- ल
6. ओष्ठ्य वर्ण	- उ, ऊ और पवर्ग
7. कष्ठ- तालव्य वर्ण	- ए और ऐ
8. कण्ठोष्ठ्य वर्ण	- ओ और औ
9. दन्तोष्ठ्य वर्ण	- व
10. नासिक्य वर्ण	- पंचमाक्षर और अनुस्वार
11. अलिजिह्व वर्ण	- क, ख, ग, ज और फ

उच्चारण करने की स्थिति में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि क्रमशः आती रहती है और ध्वनियों के मध्य आवश्कतानुसार अल्पकालिक विराम की अवस्था आती है। इसी को 'संगम' कहा जाता है। इस एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि पर जाने के दो तरीके होते हैं-

(a) कभी वक्ता सीधे पहली से दूसरी ध्यानि पर चला जाता है। जैसे -
तुम् (तुम्हारा के उच्चारण में)

(b) कभी वक्ता थोडा स्यादा समय लता है। जैसे- तुम हारे (तुम्हारे के उच्चारण में)
संगम के लिए किसी विराम चिन्ह की आवश्यकता नहीं पडती है। इसके प्रयोग से शब्दों या वाक्यों के अर्थो में भिन्नता आ सकती है। जैसे-
नफीस - सुन्दर (एक साथ उच्चारित होने पर)
न फीस - निःशुल्क (अलग-अलग उच्चारित होने पर)
सोना- स्वर्ण सोना- मत सो
वाक्यों में प्रयोग देखें-
वह बैलगाडी खींचता है। (कोई व्यक्ति)
वह बैल गाडी खींचता है। (बैल के बारे में)

उच्चारण के समय जब स्वरों पर अधिक बल पडता है तब उसे बलाघात या स्वराघात कहा जाता है।
यह तीन तरह का होता है-

1. **वर्ण-बलाघात :** इससे अर्थ में अन्तर आ जाता है। जैसे-पिट-पीट, लुट-लूट
इन उदाहरणों में स्पष्ट देखा जा रहा है कि 'पि' और 'लु' पर बलाघात के कारण अर्थों अंतर आ गया है।
2. **शब्द-बलाघात :** इससे वाक्यों के अर्थों में स्पष्टता आती है।
3. **वाक्य - बलाघातः** इसमें वाक्य के भिन्न-भिन्न पदों पर बलाघात के कारण भावों में अंतर देखा जाता है।
ध्वनियों की उस छोटी से छोटी इकाई को 'अक्षर' कह जाता है, जिनका उच्चारण एक झटके में होता है। जैसे-
आ- एक ध्वनिवाला अक्षर
खा- दो ध्वनियों वाला अक्षर
बैठ- तीन ध्वनियों वाला अक्षर

अक्षर दो प्रकार के होते हैं-

(a) बद्धाक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि हलंतयुक्त हो। जैसे- श्रीमान्, जगत्, परिषद् आदि।

(b) मुक्ताक्षर : जिसकी अंतिम ध्वनि स्वर हो। जैसे- खा, ला, पी, जा, जगत आदि।
जब कोई व्यंजन वर्ण स्वयं से ही संयोग करें, तो वह 'युग्मक ध्वनि' और जब किसी अन्य व्यंजन वर्ण से करे तो वह 'वयंजन गुच्छ कहलाता है।

शॉर्ट ट्रिक

वर्णों के उच्चारण स्थान के लिए इसे याद कर लें

'अकह विसर्ग' कण्ठराम।	'इचयश' भी हैं तालु राम॥
'ऋ' से जानो मूर्द्धा जी।	'लृतस' पुकारो दन्त जी ॥
'उप' आते है ओष्ठ में।	केवल 'व' दन्तोष्ठ में ॥
'ए-ऐ' कहे कण्ठ- तालु।	'ओ - औ' कहे कण्ठोष्ठ में ॥
नासिका से पंचमाक्षर।	जिवा रखो प्रकोष्ठ में ॥

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER
वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।
किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।
जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।
जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)
नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे – अ३, आ३, इ३, ई३, उ३, ऊ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।
नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।
बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।
जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।
जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) **मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।**

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।
(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)
(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।
स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –
(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्
(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्
(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।
कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।
जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।
कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।
जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।
क्ष – ष् + अ
त्र – त् + र + अ
ज्ञ – ज् + ञ्+ अ
श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ङ्, ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण
मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है
इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।
इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii).उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ड., ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	**संधि स्वर**
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (é)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
(1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
(3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	**व्यंजन**	**कुल**
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	.क ख़ ग़ ज़ .फ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्ध्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

3 CHAPTER संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है। सुंदरता एक गुण का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

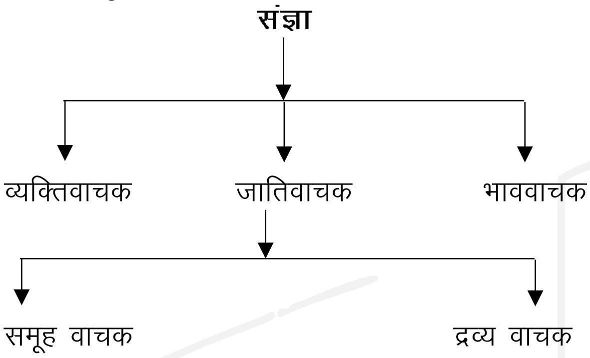

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

- व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. भाववाचक संज्ञा – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरता
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालाक	चालाकी
निपुण	निपुणता

शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट / थकान
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान
सुनना	सुनवाई
कमाना	कमाई
गाना	गान
चमकना	चमक
उड़ना	उड़ान
पीना	पान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा** – ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा** – किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, घी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
   आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
   सर दार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
   गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –
  गरीब गरीबों
  बड़ा बड़ों
  अमीर अमीरों

22 CHAPTER

NOUN (संज्ञा)

- किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण, कार्य या अवस्था के नाम को Noun कहते है ।
- यह पाँच प्रकार की होती है –
  1. **Proper Noun** (व्यक्तिवाचक संज्ञा) – जब व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो ।
     Eg:- Ram, Delhi, Gita etc.
  2. **Common Noun** (जातिवाचक संज्ञा) – जब एक वर्ग अथवा जाति के व्यक्ति या वस्तु का बोध हो ।
     Eg:- King, Boy, City, Girl etc.
  3. **Collective Noun** (समूहवाचक संज्ञा) – जब समूह का बोध हो है ।
     Eg:- Team, Herd, Committee, Army etc.
  4. **Material Noun** (द्रव्यवाचक संज्ञा) – जब ऐसे पदार्थ का बोध हो जिससे दूसरी वस्तुएं बनायी जा सके ।
     Eg:- Gold, Silver, iron, wood etc.
  5. **Abstract Noun** (भाववाचक संज्ञा) – जब ऐसे गुण, भाव, क्रिया एवं अवस्था का बोध हो जिन्हे देखा व छुआ नहीं जा सके, केवल महसूस किया जा सकता है ।
     Eg:- Honesty, Virtue, Kindness, Jealous etc.

Important Point

1. कुछ Noun ऐसे होते है जो देखने में Plural लगते है, परंतु अर्थ में Singular होते है ।
   Such as - Civics, Mathematics, Ethics, Politics, Economics, Mumps, Billiards, Athletics etc.
   Eg:- Civics is a good subject.
2. कुछ Noun देखने में singular लगते है, लेकिन अर्थ में Plural होते है ।
   Such as - Cattle, Gentry, Peasantry (किसानी), Poultry (मुर्गीफॉर्म), Clergy (पादरी लोग) etc.
   Eg:- Cattle are grazing in the field.
3. कुछ शब्द जैसे– Committee, Audience, Police, team, mob (भीड) देखने में Singular लगते है but अर्थ में Plural होते है ।
4. कुछ Noun का Use Singular form में किया जाता है, ये Uncountable Noun होते है ।
   Such as - Scenery, Furniture, information, advice, poetry, luggage, luck, language, business, knowledge, money, Jewelry.
   Eg:- He gave me information's (information).
   I like Shakespeare's poetries (Poetry).
5. कुछ Noun Singular व Plural दोनों में Use होते है।
   Such as –
   Dear, Fish, Crew, Family, team, counsel (परामर्श)
6. यदि किसी Noun से पूर्व Preposition आता है तो वह Singular noun होता है ।
   Eg:- Ship after ship is coming.
7. कुछ noun ऐसे होते है जिनमें 'S' लगाने से उनका अर्थ बदल जाता है ।
   Such as -
   Water – Waters (समुद्र)
   People – Peoples (बहुत से राष्ट्र के लोग)
   Iron – irons (बेडिया)
   Physic (दवा) – Physics (भौतिकी)
   Eg:- your physics is (are) poor.
8. Dozen (दर्जन), Gross, score, hundred, thousand, Million (10 Lac), Billion (100 Lac), Weight, stone, pair, units में एक जैसा प्रयोग होता है अर्थात् Singular or Plural दोनो में प्रयोग होता है ।
   Eg:- I have bought two dozens (Dozen) pencils.
   I have bought dozens of Bananas.

Unleash the topper in you

9. 'ICS' ending noun के पहले 'The' अथवा possessive, adjective, my, your, our का प्रयोग होने पर इनका अर्थ बदल जाता है अतः ये plural noun के रूप में बदल जाते है ।

Eg.:- My mathematics are not very good.

10. (i) Cloths – बिना सिले हुए

Clothes – सिले हुए

(ii) Cost - कीमत

Price – कीमत

- Cost का use amount of paid by the shopkeeper के अर्थ में होता है ।
- जबकि price का अर्थ Amount Paid by customer के रूप में होता है ।

Eg :- The price of production of automobile items has gone up. (The cost of)

Eg :- Sometimes buyers (खरीदने वाला) have to pay higher costs for items. (Higher price)

11. 'House' का प्रयोग A building to live in के अर्थ में करते है ।

Eg :- Quarters are homes allotted for a definite period. (×)

Quarters are houses allotted for a definite period. (✓)

12. कुछ Nouns का प्रयोग Plural form में ही होता है । इनके अंतिम में लगे 'S' को हटाकर singular नहीं बनाया जा सकता है ।

Scissors, tongs, pliers, trousers, plants, pajamas, shorts, gallus, Spectacles, binoculars, alms, amends, fireworks, outskirts, particulars etc.

Eg:- All his assets were seized.

Alms are given to the beggars.

13. Hyphenated noun का प्रयोग कभी भी plural noun में नहीं होता है ।

Eg :- He gave me two hundred rupees notes. (×)

He gave me two hundred rupee notes. (✓)

He stays in five stars hotels. (×)

He stays in five star hotels. (✓)

14. Common Gender Nouns

जैसे– teacher, student, child, clerk, advocate, worker, writer, leader, musician etc. dual gender noun होते है । इनके साथ सामान्य तथा he/his/him प्रयोग करते है ।

Eg :- Every leader should perform his duty.

A teacher should perform his duty sincerely.

15. कुछ nouns का प्रयोग लोग बोल–चाल की भाषा में करते है लेकिन वास्तव में उनका प्रयोग करना बिलकुल गलत होता है ।

Eg:-

	गलत प्रयोग	सही प्रयोग
1.	Cousin brother or cousin sister	Cousin
2.	Pickpocketer	Pickpocket
3.	Good name	Name
4.	Big/small blunder	Blunder (blunder का अर्थ होता है बडी भूल। अतः big का प्रयोग गलत है।)
5.	Strong breeze	Strong wind (Breeze हमेशा light एवं gentle होता है।)
6.	Bad dream	Nightmare

16. निम्नलिखित nouns में भी हमें confusion रहता है–

1.	Floor (फर्श)	Ground (जमीन)
2.	skill (सीख कर प्राप्त करते है)	Talent Inborn (जन्म से होता है ।)
3.	Envy (ईर्ष्या जो दूसरों की चीजों को देख कर होती है ।)	Jealousy (ईर्ष्या जो अपनी चीजों के खोने के डर से हाती है ।)

17. कुछ nouns के singular एवं plural forms के अर्थ पूर्णतया अलग होते है, अतः इनका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए ।

Eg :-

Singular	**Meaning**	**Plural**	**Meaning**
Air	(हवा)	Airs	(दिखावटी व्यवहार)
Return	(वापसी)	Returns	(आय का हिसाब)
Iron	(लोहा)	Irons	(जंजीरे)
Sand	(रेत)	Sands	(रेगिस्तान)
Wood	(लकडी)	Woods	(जंगल)
Abuse	(दुरूपयोग)	Abuses	(कुरूतियाँ)
Good (adj.)	(अच्छा)	Goods	(सामान)
Water	(पानी)	Waters	(समुद्र)
Work	(काम)	Works	(साहित्य लेख)
Fruit	(फल जैसे सेब इत्यादि)	Fruits	(नतीजा) (मेहनत इत्यादि का)
Wit	(वाक्पटुता)	Wits	(बुद्धिमता)

18. कुछ विदेशी भाषा के Nouns के Plural forms नीचे दिये गए है –

Singular	**Plural**
Agendum (कार्यक्रम)	Agenda
Erratum (छापेखाने की भूल)	Errata
Alumnus (विद्यार्थी)	Alumni
Axis (धुरी)	Axes
Analysis (विश्लेषण)	Analyses
Bacillus (हानिकारक कीटाणु)	Bacilli
bandit (लुटेरा)	Banditti (bandits)
Bacterium (कीटाणु)	Bacteria
Basis (आधार)	Bases
Criterion (कसौटी)	Criteria
Crisis (संकट)	Crises
Datum (जानी हुई बात)	Data
Dictum (सिद्धान्त)	Dicta
Formula (सूत्र)	Formulae/formulas
Memorandum (स्मृतिपत्र)	Memoranda
Sanatorium (स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान)	Sanatoria
Phenomenon (घटना)	Phenomena
Thesis (अनुसंधानपूर्ण लेख)	Theses
Medium (माध्यम)	Media
Radius (त्रिज्या)	Radii
oasis (रेगिस्तान की हरी-भरी भूमि)	Oases
Series (क्रम)	Series
species (जाति)	Species
Apparatus (यंत्र)	Apparatus
Terminus (अंत)	Termini
Index (सूची)	Indices
Hypothesis (शर्त/उपकल्पना)	Hypotheses
Parenthesis (निक्षीप्त वाक्य)	Parentheses
Genius (विद्वान, प्रतिभाशाली व्यक्ति)	Genii/Geniuses
Metamorphosis (कायान्तरण)	Metamorphoses
Narcosis (बेहोशी)	Narcoses

Diagnosis (रोगी का निर्णय)	Diagnoses
Album (संग्रह पुस्तक)	Albums
Mausoleum (मकबरा/समाधि)	Mausoleums, Mausolea
Forum (मंच/न्यायालय)	Forums
Premium (किश्त)	Premiums
Museum (संग्रहालय)	Museums
Auditorium (श्रोताकक्ष)	Auditoriums
Aquarium (जल-जीवशाला)	Aquariums/Aquaria
Curriculum (पाठ्यक्रम)	Curriculums/Curricula
Stadium (स्टेडियम)	Stadiums
Harmonium (हारमोनियम)	Harmoniums
Gymnasium (व्यायामशाला)	Gymnasiums
Asylum (आश्रम)	Asylums

Some Important Collective Noun -

बाल का समूह	-	Turp of hair
गुथे बालों का समूह	-	Shock of hair
स्त्रोताओं की मण्डली	-	An assembly of listeners
न्यायाधीशो की मण्डली	-	A bench of Judges
कूड़े-कचरे का ढेर	-	heap of rubbish
मुर्गी के बच्चों का समूह	-	flock of chickens
सोने का ढेर	-	hoard of gold
राज्यों का संगठन	-	league of states
अनाजों का ढेर	-	A sheaf of corn
हथियारों का ढेर	-	Piles of arms
अध्ययन का पाठ्यक्रम	-	A syllabus of studies
सैनिकों का समूह	-	Regiment of soldiers
दीमकों का झुंड	-	A colony of termites

Collection of people -

A brigade of cavalry.	(घुड़सवार सैनिकों का दल)	A contingent of boy scouts.	(स्काऊट के लडकों का दल)
A brigade of infantry.	(पैदल सैनिकों का दल)	A corporation of people.	(लोगों की मंडली)
A brigade of artillery.	(आग्नेयास्त्र चलाने वाले सैनिकों का दल)	A corps of volunteers.	(स्वयंसेवकों का समूह)
A batch of pupils.	(शिष्यों का समूह)	A multitude of people.	(लोगों की भीड)
An assembly of representatives.	(प्रतिनिधियों की मंडली)	A muster of troops.	(सैनिकों का दल)
A caravan of pilgrims.	(तीर्थयात्रियों का काफिला)	A panel of judges.	(न्यायाधीशों का समुदाय)
A caravan of merchants.	(व्यापारियों का कारवाँ)	A panel of jurymen.	(अभिनिर्णायकों का समूह)

A bench of judges.	(न्यायाधीशों की मंडली)	A pack of fools.	(मूर्खों का झुंड)
A circle of friends.	(मित्रों की मंडली)	A pack of knaves.	(धूर्तों/पापियों/दुष्टों का झुंड)
A circle of acquaintances.	(परिचितों की मंडली)	A platoon of musketeers.	(बंदूक लिये हुए फौजियों का दल)
A clique of schemers.	(उपाय रचने वालों की मंडली)	A posse of policemen.	(सिपाहियों का सशक्त दल)
A colony of people.	(लोगों की नई बस्ती)	A procession of people.	(लोगों का जुलूस)
A company of actors.	(अभिनेताओं की मंडली)	A queue of people.	(लोगों की कतार/पंक्ति)
A company	A company	A senate of councilors.	(सभासदों की समिति)
of merchants.	of merchants.	A senate of university members.	(विश्वविद्यालय के सदस्यों की समिति)
(व्यापारियों की मंडली)	(व्यापारियों की मंडली)	A squad of soldiers drilling.	(ड्रील करने वाले सैनिकों का झुंड)
A concourse	A concourse	A staff of officials.	(अधिकारियों का समूह)
of people.	of people.	A staff of servants.	(नौकरों का समूह)
(लोगो का समूह)	(लोगो का समूह)	A stream of visitors.	(अभ्यागतों/भेंट करने वालों का समूह)
A conference of preachers.	A conference of preachers.	A string for coolies.	(कुलियों की पंक्ति)
A congress of delegates.	(प्रतिनिधियों की सभा)	A school of thinkers.	(विचारको का झुंड)
A contingent of army personnels.	(थल सैनिकों का दल)	A school of learned men.	(विद्वानों का समूह)

Collection of animals, birds and insects -

A troop of lions.	(शेरों का झुंड)	A swarm of flies.	(मक्खियों का झुंड)
A troop of monkeys.	(बंदरों का झुंड)	A swarm of bees.	(मधुमक्खियों का झुंड)
A train of donkeys.	(गधों का समूह)	A swarm of locusts.	(टिड्डों का झुंड)
A team of horses.	(घोडों का समूह)	A stud of ponies.	(छोटे घोडों का झुंड)
A team of oxen.	(बैलों का झुंड)	A stud of horses.	(घोडों का झुंड)

Some Important Abstract Noun

Adjective	**Abstract Noun**	**Verb**	**Abstract Noun**
Able	Ability	Belong	Belongings
Brief	Brevity	Allow	Allowance
Careful	Carefulness	Accede	Access
Capable	Capability	Admit	Admission
Efficient	Efficiency	Attend	Attendance
Faithful	Faithfulness	Choose	Choice
Hard	Hardship	Carry	Carriage

Excellent	Excellence	Consume	Consumption
Curious	Curiosity	Deceive	Deceit
Careless	Carelessness	Practice	Practice
Busy	Business	Behave	Behavior
Active	Activity	Arrive	Arrival

Words Denoting Group -

Lions	-	Pride (Female), Coalition (male)
Dogs	-	Kennel, Pack (आवारा, शिकारी कुत्ते)
Trees	-	Woodland, Grove (बडे वृक्षों, छोटे पौधों)
Tigers	-	Ambush, Streak
Ships	-	Fleet, Armada (Normal ships, war ships)
Sheep's	-	Flock, Herd, Mob
Fish	-	School, Shoal (बहुत सारे shoal एक line में आ जाये)
Magicians	-	Wizard, Warlock (+ve effects, -ve effects)
People	-	Crowd, Mob (disarrange group, अव्य भीड)
Puppy	-	Litter of puppies

Noun and Gender -

Gender

Masculine	–	Poet, horse, fox
Feminine	–	Poetess/ Mare/ Vixen
Neuter	–	Chair, Pen
Common	–	Friend/ Student

Masculine	**Feminine**
Tutor (नीति शिक्षक)	Governess (नीति शिक्षिका)
Nephew (भतीजा)	Niece (भतीजी)
Groom (दुल्हा)	Bride (दुल्हन)
Wizard (जादूगर)	Witch (जादुगरनी)
Lover (प्रेमी)	Beloved (प्रेमिका)
Lord (स्वामी)	Lady
Gander (हंस)	Goose (हंसीनी)

- कुछ शब्दों को Feminine मानते है अतः इनके साथ Pronoun Her, Hers, She या herself लगाते है।
  Such as - The moon, The earth, Nature, Spring, Virtue, Charity, mercy, peace, ship, river, nation, fame, city, liberty.
  Eg :- The moon shed <u>its</u> (her) light on the bank.
  Love virtue <u>it</u> (she) is alone free.
- The Sun, time, death, wind, Summer, thunder, Ocean, love, war, wine को masculine माना जाता है । इनके साथ He, his, him, himself का Use करते है।
  Eg :- Death lays her (his) icy hand or king.
- Everything, something, anything, nothing, indefinite pronoun है, ये neuter gender को प्रकट करते है ।
  Eg :- Everything should be kept in his (✗) /its (✓) order.
  This is Mohan's Pen. (यह मोहन का पेन है ।)
  This is the door of the house. (यह घर का दरवाजा है ।)
  This is Girl's college. (यह लडकियों का विद्यालय है ।)
- यदि दो noun and से जुडे हो तो उनके बीच close relation ना हो तो दोनों nouns के (अलग-अलग अधिकार के अर्थ में) साथ Apostrophe's का प्रयोग करते है।
  Eg:- Mohan's and Sohan's house. (मोहन का घर और सोहन का घर ।)

Note : - यदि सम्मिलित अधिकार की बात है तो last noun के साथ Apostrophe's लगाते है ।

Eg:- Mohan and Sohan's house.

23 CHAPTER

PRONOUN (सर्वनाम)

- Noun के बदले प्रयुक्त होने वाले शब्द को Pronoun कहते है ।
- Noun के repetition से बचने के लिए ही pronoun का प्रयोग किया जाता है ।

Pronoun के प्रकार

1. Personal Pronoun (पुरूषवाचक सर्वनाम)
   I, me, we, us, you, he, him, she, etc.
2. Relative Pronoun (संबंधवाचक सर्वनाम)
   Who, whom, whose, which, that etc.
3. Interrogative Pronoun (प्रश्नवाचक सर्वनाम) Who, what, whom, whose, where, etc.
4. Reflexive Pronoun (निजवाचक सर्वनाम) Myself, ourselves, yourself, yourselves, etc.
5. Emphatic Pronoun (दृढता वाचक सर्वनाम) Myself, yourself, himself, herself etc.
6. Demonstrative Pronoun(संकेतवाचक सर्वनाम) This, that, these, those etc.
7. Reciprocal Pronoun (परस्पर सूचक सर्वनाम) Each other, one another etc.
8. Distributive Pronoun (विभागबोधक सर्वनाम) Each, either, neither, every, none etc.
9. Indefinite Pronoun (अनिश्चित सर्वनाम) Everybody, somebody, someone, no one, much, few, little etc.
10. Exclamatory Pronoun (विस्मयादिबोधक सर्वनाम) What! etc.
11. Possessive Pronoun (अधिकारवाचक सर्वनाम) Mine, ours, yours, his, hers etc.

- **Personal Pronoun** :- वे pronoun जो तीनों persons (1,2,3) में होते है ।

Persons	Subjective Case	Objective Case
1st person	I	Me
	We	Us
2nd person	You	You
3rd person	He	Him
	She	Her
	It	It
	They	Them

- **Relative Pronoun** - वे pronoun जो अपने पहले प्रयुक्त nouns या noun equivalent words से संबंध बताते है तथा दो sentences को जोडने का कार्य करते है, Relative Pronoun कहलाते है । (Who, which, that, whom, whose etc.)

  Ex :- I met Veena, <u>who</u> was returning from school. **(R.P.)**
  he pen <u>that</u> my father gave writes well.

- **Interrogative Pronoun -** वे pronoun जो प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होते है ।
  जैसे– (What, who, where, whose, which)
- **Reflexive Pronoun -** जब वाक्य में 'स्वयं', खुद ही, खुद को, अपने आप जैसे शब्दों का प्रयोग हो तब Reflexive Pronoun का use होता है ।
  Ex :- The poor man poisoned himself and his children.
- **Emphatic Pronoun -** यदि sentence में प्रयुक्त verb से पूर्व Myself, himself, yourself, itself आये तो Emphatic होता है और बाद में आये तो Reflexive Pronoun होता है ।
  Ex :- I myself did it. (Emphatic)
  I did it myself. (Reflexive)
- **Demonstrative Pronoun -**
  This/that/these/those, such, the same.
- **Reciprocal Pronoun -** Each other/one another.
  दो के बीच परस्पर शब्द की अंग्रेजी – Each other

दो से अधिक के लिये – One Another

Ex:- Ram and Sohan quarrel each other. (✓)

Four sons quarrel one another. (✓)

- **Distributive Pronoun -** Each, either, neither
- **Indefinite Pronoun -** Somebody, anybody, everybody, nobody, anyone, all.
- **Exclamatory Pronoun -** What!

Uses of Pronouns

1. Personal Pronoun

(i) जब विभिन्न Pronoun एक ही sentence में प्रयुक्त हो तब–

बुरी बात का आभास न हो → 2 3 1

बुरी बात कही गयी हो → 1 2 3

Ex:- You, he and I shall study for the exam. (Good sense)

I, you and he have made a blunder. (Bad sense)

(ii) Let, like, between, but, except एवं preposition के बाद objective case का प्रयोग होता है।

Ex:- Let me do this work.

My daughter looks like me.

(iii) दो Nominative के बीच तुलना हो तो As/than के बाद Nominative case का प्रयोग

Ex:- He is as fast as I.

I run faster than he.

(iv) दो objective के बीच तुलना हो तो As/than के बाद objective case pronoun का प्रयोग किया जाता है।

Ex:- I know you as much as him.

2. Possessive Pronoun

(i) इनका प्रयोग noun के पहले नहीं होता है।

Eg:- Ours school was closed for four days. (×)

Our school was closed for four days. (✓)

(ii) sentence में verb के subject के रूप में–

Ex:- Yours is a new car.

Hers is a beautiful house.

(iii) sentence में verb के object के रूप में–

Ex:- Save your time and mine too.

(iv) Preposition के object के रूप में–

Ex:- I prefer your help to hers.

(v) Separation, leave, excuse, mention, report, pardon, sight, favor के साथ possessive case –

Ex:- At his sight the robbers fled. (×)

At the sight of him the robbers fled. (✓)

(vi) Gerund (V^1 + ing) के पहले possessive adjective का प्रयोग –

Ex.:- I was confident of my winning the match.

She was not confident of her doing well in the examination.

3. Reflexive Pronoun

(i) Acquit, avail, reconcile, amuse, resign, avenge, except, apply, adapt, adjust, pride, absent एवं enjoy के बाद Reflexive –

Ex:- You should avail yourself of this opportunity.

The officers acquitted themselves well during the crisis.

(ii) Keep, stop, turn, qualify, bathe, move, rest, open, sell, wash, drains, shave, concentrate, feel, hurry के बाद Reflexive नहीं–

Ex:- He hid himself in the room. (×)

He hid in the room. (✓)

4. Distributive Pronoun

(i) **Either** – दो में से कोई एक

Ex:- Either of these two pens is red.

(ii) **Neither** – दो में से कोई भी नही।

Ex:- Neither of those two girls is active.

5. Reciprocal Pronoun

(i) **Each other-** दो व्यक्ति या वस्तुओं के लिए

(ii) **One another** - दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए

Ex:- He was so afraid that his knees knocked each other.

After the farewell, the students bade one another goodbye.

6. Relative Pronoun

(i) Who/which/that का प्रयोग subordinate clause के subject के रूप में–

Ex:- The boy <u>who</u> came here is a player.

(ii) And से जुड़कर दो antecedent, जिनमें एक मनुष्य तथा दूसरा जानवर/वस्तु हो तो 'that' आयेगा।

Ex:- The man and his dog <u>that</u> I saw yesterday have been kidnapped.

(iii) Superlative degree + that

Ex:- Kabir is the most laborious man that I have ever seen.

(iv) All का प्रयोग व्यक्ति के लिए होने पर – who/that

All का प्रयोग वस्तु के लिए होने पर – that

All + singular uncountable noun – that

(v) The same + noun के बाद That

Ex:- This is the same man that deceived me.

7. Interrogative Pronoun

(i) Who – subject का पता

Whom – object का पता

Whose – मालिक का पता करने के लिए

Ex:- who is playing?

Whom has he invited?

Whose book is this?

(ii) जब दो या दो से अधिक में से एक का चुनाव करना हो– Which

Ex:- Which is your brother in the crowd? (✓)

Who is your brother in the crowd? (×)

8. Demonstrative Pronoun - (This, That, There, Those, Such, The same)

(i) This/That – समीप की वस्तु/वस्तुओं के लिए

Ex:- This is a cat.

These are cats.

(ii) That/Those – दूर की वस्तु/वस्तुओं के लिए

Ex:- That is a book.

Those are book.

- Singular noun के repetition को रोकने के लिए - 'That of'

  Plural noun के repetition को रोकने के लिए - 'Those of'

  Ex:- The climate of Pune is better than that of Mumbai.

  The streets of Delhi are wider than those of Mumbai.

Some special rules for Pronoun -

(1) Like तथा unlike का use preposition की तरह होता है। इसके साथ कभी–कभी verb के रूप में भी होता है ।

like and unlike preposition की तरह प्रयुक्त हो तो pronoun objective case में रहता है ।

Ex:- My daughter looks like I. (×)

My daughter looks like me. (✓)

(2) Let शब्द के बाद Objective case में pronoun का प्रयोग करते है।

Ex:- Let he go. (×)

Let him go. (✓)

(3) Preposition के बाद Objective case में Pronoun का use होता है न कि nominative case के pronoun का

Ex:- Ravi laughed at you and I. (×)

Ravi laughed at you and me. (✓)